AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक माध्यम

ORIGINAL ARTICLE

Authors
डॉ. सुरेन्द्र कुमार
आईसीएसएसआर पोस्ट डोक्टोरल रिसर्च फेलो

प्रो. (डॉ.) मनोज मिश्र
प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक माध्यम विषयक इस आलेख में अनौपचारिक शिक्षा के महत्व और इसके लिए वैकल्पिक मीडिया के उपयोग पर प्रकाश डाला गया है। अनौपचारिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जो औपचारिक शिक्षा प्रणाली से बाहर होती है और व्यक्ति के अनुभवों, रुचियों और आवश्यकताओं के अनुसार लचीली होती है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में नमनीयता, खुलापन और समावेशिता शामिल हैं। यह विशेष रूप से समाज के कमजोर और पिछड़े वर्गों के लिए एक सशक्त माध्यम है। सन् 1968 में फिलिप कूम्बस ने अनौपचारिक शिक्षा की अवधारणा प्रस्तुत की। यह प्रणाली व्यक्ति को सीखने की स्वतंत्रता देती है और समाज की जरूरतों के अनुसार शिक्षा प्रदान करती है। इसका उद्देश्य समाज में समानता और समावेशिता को बढ़ावा देना है। इसके उदाहरणों में खुले विद्यालय, पत्राचार पाठ्यक्रम और सामुदायिक शिक्षा कार्यक्रम शामिल हैं। वैकल्पिक मीडिया समाज के उन मुद्दों और वर्गों को सामने लाना है, जो अक्सर मुख्यधारा की मीडिया द्वारा उपेक्षित रहते हैं। वैकल्पिक मीडिया सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्यों और जनता की आवाज़ को सशक्त करता है। ऐतिहासिक दृष्टि से, यह श्रमिक आंदोलनों, स्वतंत्रता संग्राम और डिजिटल युग के माध्यम से विकसित हुआ है। भारत में, यह गांधी और अंबेडकर की पत्रकारिता से लेकर डिजिटल मीडिया प्लेटफार्मों तक विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ है। वैकल्पिक मीडिया की प्रासंगिकता डिजिटल युग में बढ़ गई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने इसे एक नई दिशा दी है, जिससे सूचना का लोकतंत्रीकरण हुआ है। यह समाज के वंचित वर्गों के मुद्दों को उजागर करता है और उन्हें सशक्त बनाने में मदद करता है। वैकल्पिक मीडिया अनौपचारिक शिक्षा के प्रसार में एक प्रभावी माध्यम है। यह समाज में सकारात्मक परिवर्तन और शिक्षा के व्यापक प्रसार के लिए एक मजबूत मंच प्रदान करता है।

मुख्य शब्द

अनौपचारिक शिक्षा, वैकल्पिक मीडिया, लोकतांत्रिक मूल्य, सामाजिक न्याय, डिजिटल युग, सूचना लोकतंत्रीकरण.

प्रस्तावना

वैकल्पिक मीडिया की उपस्थिति पूरे विश्व में है, लेकिन भारत में इसकी विशिष्ट भूमिका रही है। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन तथा देश में हो रहे तमाम तरह के जनआंदोलनों को सफल बनाने में वैकल्पिक मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। मीडिया के वैकल्पिक माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा भी प्रदान की जा रही है। अनौपचारिक शिक्षा

सामाजिक और आर्थिक विकास की योजनाओं में उन अन्तरालों को भरती है जिनसे प्रगति में बाधा पड़ती है। वास्तव में उसका अपना प्रमाणिक अधिकार है। वह ऐच्छिक, नियोजित, व्यवस्थित तथा आर्थिक सहायता प्राप्त शिक्षा प्रणाली है। वह औपचारिक शिक्षा के समान क्रियात्मक, स्थान और काल में असीमित और आवश्यकताओं के प्रति प्रतिक्रियात्मक शिक्षा प्रणाली है, आवश्यकताओं और परिवर्तन विकास के द्वार खोल देती है। ऐसे में अनौपचारिक शिक्षा के लिए वैकल्पिक मीडिया का इस्तेमाल किया जाना एक महत्त्वपूर्ण विकल्प साबित हो रहा है। प्रस्तुत शोध आलेख में इसी विषय की पड़ताल की गई है।

अनौपचारिक शिक्षा की अवधारणा

अनौपचारिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जो औपचारिक शिक्षा प्रणाली से बाहर होती है और व्यक्ति के अनुभव, रुचियों और जरूरतों के अनुसार लचीली और अनुकूल होती है। यह विशेष रूप से कमजोर और पिछड़े वर्गों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनके लिए आसानी से उपलब्ध शैक्षिक अवसर प्रदान करती है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं:

1. **नमनीयता (Flexibility)**: यह सीखने के समय, स्थान और माध्यम में पूर्ण स्वतंत्रता देती है।
2. **खुलापन (Openness)**: इसमें कोई कठोर नियम या पाठ्यक्रम नहीं होता, जिससे व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा ग्रहण कर सकता है।
3. **समावेशिता (Inclusiveness)**: यह उन लोगों को शिक्षा प्रदान करती है जो औपचारिक शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। अनौपचारिक शिक्षा समाज के हर वर्ग के लिए, विशेष रूप से पिछड़े और कमजोर वर्गों के लिए, प्रगति और सशक्तिकरण का एक सशक्त माध्यम है। दाखिले, पाठ्यक्रम, शैक्षिक स्थल, शिक्षा प्रणाली, प्रशिक्षण का समय और अवधि किसी पर भी रोक नहीं होती। इन्हें परिस्थितियों के अनुसार बदला जा सकता है। अनौपचारिक शिक्षा के कुछ उदाहरण हैं। खुले विद्यालय, खुले विश्वविद्यालय, खुला सिखाना और पत्राचार पाठ्यक्रम इत्यादि।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उपनिवेशवाद के खात्मे से कई नवोदित राष्ट्र अस्तित्व में आए। इन देशों में शिक्षा को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा गया। साठ के दशक में सब कहीं यह जानकार बेचैनी थी कि मात्र औपचारिक शिक्षा की सुविधाओं के विस्तार से सभी समस्यायें हल नहीं हो पा रही हैं। औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के रूप में शिक्षा का वर्गीकरण एक बड़ा व्यवधान छोड़ देता है। फिलिप कूम्बस तथा अन्य के अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ कि विकसित समाजों में एक नई प्रकार की शिक्षा प्रणाली का विकास किया गया है जिसे अनौपचारिक शिक्षा का नाम दिया गया। इस अनौपचारिक शिक्षा में तीव्र गति से परिवर्तनशील समाजों की न्यूनावधि की आवश्यकताओं को पूरा करने की लिए अत्यधिक क्रियात्मक कार्यक्रम थे।

अरस्तु के विचारों के अनुसार, शिक्षा की तीनों प्रणालियाँ–औपचारिक, अनौपचारिक, और अनौपचारिक एक दूसरे को पूरा करती हैं और मिलकर व्यक्ति और समाज के समग्र विकास में योगदान करती हैं। अनौपचारिक शिक्षा की लचीलापन और समावेशिता इसे विशेष रूप से मूल्यवान बनाती है। अरस्तु अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के साथ समायोजन के रूप में देखी और आयोजित की जानी चाहिए। यदि उसका संगठन औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा से अलग हटकर नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि इससे यह एक अप्रयाप्त और प्रभावहीन प्रणाली सिद्ध होगी। दुसरे उसे कुछ बुनियादी कौशल तक ही सीमित नहीं किया जाना चाहिये। उसकी व्यवस्था समस्त सामाजिक–आर्थिक परिवेश के प्रसंग में एक आधुनिक सामाजिक संदर्भ, एक अधिक संगठित समुदाय के लिए की जानी चाहिये। यह समुदाय एक ऐसे परिवर्तन और नवीनीकरण की प्रतीक्षा में है जिसमें शिक्षा की तीनों प्रणालियों योगदान दे सकती है। इसके लिये समुदायिक आवश्यकताओं और अधिगम व्यवस्थाओं के मध्य अन्तर को भरना आवश्यक है।

अनौपचारिक शिक्षा की परिभाषा

अनौपचारिक शिक्षा की अवधारणा का उल्लेख 1968 में फिलिप कूम्बस (Philip Coombs) ने किया, लेकिन

इसकी स्पष्ट परिभाषा 1970 के बाद दी गई। यह शिक्षा का एक ऐसा रूप है जो औपचारिक शिक्षा के कठोर नियमों और संरचनाओं से मुक्त है। इसे पारंपरिक समाजों में शिक्षा की प्राचीन परिपाटी का आधुनिक नाम भी कहा जाता है।

अनौपचारिक शिक्षा समाज के विकास और व्यक्ति की प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। इसकी सहजता और लचीलापन इसे औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के पूरक के रूप में अनिवार्य बनाते हैं। अनौपचारिक शिक्षा की कुछ परिभाषाएं निम्नलिखित हैं:

1. **कूम्बस और अहमद:** "जनसंख्या में विशेष उपसमूहों व्यस्क तथा बालकों का चुना हुआ इस प्रकार का अधिगम प्रदान करने के लिये औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के बाहर कोई भी संगठित कार्यक्रम है"।
2. **ला बैला:** अनौपचारिक शिक्षा का संदर्भ "विशिष्ट लक्षित जनसंख्या के लिए स्कूल से बाहर संगठित कार्यक्रम है"।
3. **इलिच और फ्रेयर:** "अनौपचारिक शिक्षा औपचारिक विरोधी शिक्षा है"।
4. **मोती लाल शर्मा:** "संक्षेप में कोई कह सकता है कि अनौपचारिक शिक्षा एक सक्रिय, आलोचनात्मक, द्वंदात्मक शैक्षिक कार्यक्रम है जो कि मनुष्यों को सीखने, स्वयं अपनी सहायता करने, चेतनरूप से अपनी समस्याओं का आलोचनात्मक रूप से समान करने में सहायता करता है। अनौपचारिक शिक्षा का लक्ष्य संकलित, प्रमाणिक मानव प्राणियों का विकास करना है जो कि समाज के विकास में योगदान दे सकें। इसमें न केवल व्यक्ति बल्कि एक सच्चे अधिगम समाज में योगदान देते हुए सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था सीखती है"।

अनौपचारिक शिक्षा का एक उदाहरण खुला विद्यालय है जिसके प्रमुख लक्ष्य निम्नलिखित है:

1. औपचारिक विद्यालयों के साथ–साथ उसके विकल्प के रूप में एक समानान्तर अनौपचारिक व्यवस्था उपस्थित करना।
2. विद्यालय के बाहर पढ़ने वालों, विद्यालय छोड़ने वालों, कामगर वयस्कों, गृहणियों तथा सुदूर क्षेत्र में रहने वाले समाज के पिछड़े वर्गों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करना।
3. माध्यमिक स्तर पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के लिये प्रशिक्षुओं की ब्रिज प्रारंभिक पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करना।
4. दूर शिक्षण विधियों के द्वारा माध्यमिक सीनियर माध्यमिक, प्राविधिक और जीवन को समृद्ध बनाने वाले पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करना।
5. अनौपचारिक शिक्षा अनुसंधान, प्रकाशन, और सूचना प्रसारण के माध्यम से शिक्षा को सरल, समावेशी, और उपयोगी बनाती है। यह समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करती है और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में सहायक है। प्रौढ़ शिक्षा, सतत् शिक्षा, और कार्यस्थल पर शिक्षा इस प्रणाली के मजबूत स्तंभ हैं।

अनौपचारिक शिक्षा के साधन

अनौपचारिक शिक्षा के साधन व्यापक और विविध हैं, जो इसे लचीला और प्रभावी बनाते हैं। ये साधन व्यक्तिगत, सामुदायिक, और राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा को प्रोत्साहित करने में सहायक हैं। इनका सही उपयोग समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने और शिक्षा के दायरे को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अनौपचारिक शिक्षा व्यक्ति की आवश्यकताओं, रुचियों और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार लचीले तरीके से शिक्षा प्रदान करती है। इसके लिए निम्नलिखित साधनों का उपयोग किया जाता है:

औपचारिक शिक्षा संस्थाएं

स्कूल, कॉलेज, और विश्वविद्यालय शैक्षिक शिविर, साक्षरता अभियान और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा का प्रसार करते हैं।

विशिष्ट साधन

1. **नेहरू खेल केन्द्र:** खेल के माध्यम से अनुशासन और नेतृत्व कौशल का विकास।

2. **कारखानों में प्रशिक्षण केन्द्रः** श्रमिकों को तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा।
3. **सार्वजनिक पुस्तकालयः** सभी वर्गों के लिए ज्ञान का निःशुल्क स्रोत।
4. **पत्राचार शिक्षा केन्द्रः** दूरस्थ क्षेत्रों के लिए डाक या ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा।

क्लब और सोसाइटी (NGOs)

स्वयंसेवी और गैर–सरकारी संगठन महिलाओं, बच्चों और श्रमिकों के लिए शिक्षा कार्यक्रम चलाते हैं। कला, विज्ञान, और सांस्कृतिक क्लबों के माध्यम से शिक्षा का प्रचार–प्रसार होता है।

रेडियो और टेलीविजन

रेडियो और टीवी के शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि, स्वास्थ्य और विज्ञान जैसे विषयों की जानकारी ग्रामीण और अशिक्षित वर्गों तक पहुँचाई जाती है।

अनौपचारिक शिक्षा की प्रकृति

माल्कम आदिशिया के शब्दों में – "अनौपचारिक शिक्षा बाजार योग्य और व्यवसायिक होनी चाहिए। उसमें स्वयं–अधिगम प्रतिदिन पर जोर दिया जाना चाहिए"।

एच.ऐसी. ऐसी. लोरिन्स के शब्दों में – "अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्था औपचारिक शिक्षा व्यवस्था की प्रतियोगी नहीं बल्कि पूरक है। इनमे सामान्य तत्वों की पहचान की जानी चाहिये और संकलित व्यवस्था का विकास किया जाना चाहिए"।

अनौपचारिक शिक्षा से लाभ उठाने वाले व्यक्ति

1. **सभी आयु के लोगः** इनमें सभी आयु के वे व्यक्ति आतें हैं जिन्हें औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर कभी भी नहीं मिला।
2. **विद्यार्थीः** जो विद्यार्थी प्राथमिक अथवा माध्यमिक शिक्षा पूरी नहीं कर सके।
3. **प्रशिक्षुकः** जो शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं में विशेष रूचि के विषय में अधिक गहरे और व्यापक ज्ञान की आवश्यकता अनुभव करते हैं।
4. **श्रमिकः** नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में युवा श्रमिक, छोटे किसान, भूमिहीन किसान, छोटे व्यवसायी इत्यादि जिनको अपने कार्यों के विषय में प्राविधिक विकास एवं नवीनतम ज्ञान को जानने की आवश्यकता है।
5. **शिक्षित बेरोजगारः** विभिन्न आयु समूह के बेरोजगारों शिक्षित व्यक्ति जिनकी अप्रासंगिक शिक्षा को अधिक अप्रासंगिक बनाने की आवश्यकता है ताकि उनके रोजगार के अवसर बढ़ाये जा सकें।
6. **ग्रेजुएट, व्यवसायिक वर्ग तथा बुद्धिजीवीः** जिन्हें अपने ज्ञान को नवीनतम रूप देने के लिए विशिष्ट रिफ्रेशर पाठ्यक्रमों की आवश्यकता है।
7. **अन्य व्यक्तिः** वे लोग जिन्हें मनोरंजन, अवकाश की क्रियाओं और सांस्कृतिक अथवा कलात्मक कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

वैकल्पिक मीडिया का अर्थ और महत्व

वैकल्पिक मीडियाः मुख्यधारा की मीडिया से अलग, ऐसे माध्यम को कहते हैं, जो सामाजिक, सांस्कृतिक, और नीतिगत मुद्दों पर गंभीर, गहन, और गैर–व्यावसायिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह मुख्यधारा की मीडिया की कमी को पूरा करने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य करता है। वैकल्पिक मीडिया एक ऐसी पत्रकारिता है, जो मुख्यधारा की सीमाओं से परे जाकर सामाजिक चेतना और उत्तरदायित्व को जागृत करती है। इसके माध्यम से समाज के अनदेखे मुद्दों पर प्रकाश डाला जाता है, जिससे यह जीवंत समाज का अभिन्न अंग बनता है।

वैकल्पिक मीडिया की परिभाषा

वैकल्पिक मीडिया को मुख्यतः इस आधार पर परिभाषित किया जा सकता हैः

1. **गैर–व्यावसायिक उद्देश्यः** इसका मुख्य उद्देश्य लाभ अर्जन न होकर विचार और मुद्दों का प्रकाशन होता है।
2. **सामाजिक उत्तरदायित्वः** इसकी सामग्री समाज के प्रति उत्तरदायित्व को ध्यान में रखते हुए बनाई जाती है।
3. **प्रेरक और परिवर्तनकारीः** यह समाचार और विचारों के माध्यम से जनमानस को प्रेरित करता है।
4. **सीमित कवरेजः** यह छोटे–छोटे उद्देश्यों पर केंद्रित रहता है और नियमित रूप से प्रकाशित नहीं होता।
5. **समाचार की उपलब्धताः** इसका प्रकाशन उन्हीं मुद्दों पर होता है, जो मुख्यधारा की मीडिया द्वारा अनदेखे रह जाते हैं।

वैकल्पिक मीडिया की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

वैकल्पिक मीडिया (Alternative Media) की जड़ें सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों में गहराई से जुड़ी हैं। इसका विकास मुख्यधारा की मीडिया की सीमाओं और पक्षपात को चुनौती देने के लिए हुआ। वैकल्पिक मीडिया का पहला रूप 19वीं सदी के श्रमिक और समाजवादी आंदोलनों के दौरान सामने आया। यह माध्यम उन श्रमिकों और वर्गों के लिए बनाए गए थे, जिन्हें मुख्यधारा की मीडिया ने अनदेखा कर दिया था। वैश्विक और भारतीय संदर्भों में, वैकल्पिक मीडिया सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरा है। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि संघर्ष और बदलाव की गाथा है, जो मुख्यधारा की मीडिया की सीमाओं को चुनौती देते हुए एक स्वतंत्र और जागरूक समाज के निर्माण में योगदान देती है।

वैश्विक परिदृश्य

1. **फ्रांस, मई 1968 आंदोलनः** मई 1968 में फ्रांस के छात्र और श्रमिक आंदोलनों के दौरान वैकल्पिक मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह आंदोलन सामाजिक और राजनीतिक क्रांति का प्रतीक था, और इसने मुख्यधारा की मीडिया पर सवाल खड़े किए। इस दौरान छोटे–छोटे वैकल्पिक समाचार पत्र, पोस्टर और रेडियो चौनलों का उपयोग किया गया।
2. **अमेरिका, 1960 और 1970 का दशकः** अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन, वियतनाम युद्ध के विरोध, और नारीवादी आंदोलनों के दौरान वैकल्पिक मीडिया का विस्तार हुआ। इस समय के वैकल्पिक समाचार पत्र और रेडियो चौनल जैसे– न्दकमतहतवनदक च्तमे ने व्यापक प्रभाव डाला।
4. **डिजिटल युग और इंटरनेटः** 21वीं सदी में इंटरनेट ने वैकल्पिक मीडिया को एक नई दिशा दी। ब्लॉग, पॉडकास्ट, और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों ने इसे वैश्विक स्तर पर पहुंचाया। विकीलीक्स (Wikileaks) ने सरकारी भ्रष्टाचार और अन्य संवेदनशील मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

भारतीय परिदृश्य

1. **प्रारंभिक दौरः** भारत में वैकल्पिक मीडिया की परंपरा ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में देखी जा सकती है। महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर जैसे नेताओं की पत्रकारिता वैकल्पिक दृष्टिकोण का प्रतीक थी। गांधी जी के अखबार 'हरिजन', 'यंग इंडिया', और 'इंडियन ओपिनियन' ने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को उठाया। अंबेडकर के 'मूकनायक' और 'बहिष्कृत भारत' जैसे प्रकाशनों ने दलित और वंचित वर्गों की आवाज़ बनकर कार्य किया।
2. **स्वतंत्रता संग्राम में भूमिकाः** स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई स्वतंत्र समाचार पत्र और पत्रिकाएं शुरू हुईं, जिन्होंने ब्रिटिश सत्ता की नीतियों की आलोचना की, किसान आंदोलन और श्रमिक आंदोलनों ने अपने खुद के वैकल्पिक माध्यम विकसित किए।
3. **1960 और 1970 का दशक, आपातकालः** 1975–1977 में आपातकाल के दौरान मुख्यधारा की मीडिया

पर सेंसरशिप लागू की गई। इस समय वैकल्पिक मीडिया ने भूमिगत स्तर पर काम करते हुए लोकतंत्र की रक्षा के लिए संघर्ष किया। समाचार पत्र जैसे 'संपूर्ण क्रांति' और 'प्रतिपक्ष' ने मुख्यधारा की सेंसरशिप को चुनौती दी।

4. **ग्रामीण और सामुदायिक मीडिया:** 1980 और 1990 के दशक में कम्युनिटी रेडियो और ग्रामीण पत्रकारिता के माध्यम से वैकल्पिक मीडिया ने ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों की आवाज़ को सशक्त किया। CGNet Swara और Khabar Lahariya जैसे प्लेटफार्म इसका उदाहरण हैं।
5. **डिजिटल युग में उदय:** 21वीं सदी में इंटरनेट ने भारतीय वैकल्पिक मीडिया को अभूतपूर्व विस्तार दिया। ब्लॉग, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म, और यूट्यूब चौनलों ने आम लोगों को अपनी आवाज़ उठाने का साधन दिया। Scroll-in, The Wire, NewsLaundry जैसे वैकल्पिक समाचार पोर्टल स्वतंत्र पत्रकारिता के उदाहरण हैं।

वैश्विक और भारतीय परिदृश्य का तुलनात्मक विश्लेषण

आधार	वैश्विक परिदृश्य	भारतीय परिदृश्य
प्रारंभ	श्रमिक आंदोलन और राजनीतिक संघर्ष	स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधार आंदोलन
महत्वपूर्ण घटनाएं	फ्रांस (1968 आंदोलन), वियतनाम युद्ध विरोध	गांधी और अंबेडकर की पत्रकारिता, आपातकाल
डिजिटल युग	ब्लॉग, विकीलीक्स, सोशल मीडिया	Scroll, The Wire, ग्रामीण पत्रकारिता
प्रमुख योगदान	लोकतांत्रिक आंदोलनों का समर्थन	वंचित वर्गों की आवाज़ बनना

वैकल्पिक मीडिया का महत्व

मुख्यधारा की मीडिया के व्यवसायिक हित और उसकी नीतिगत सामग्री के अभाव ने वैकल्पिक मीडिया को महत्वपूर्ण बना दिया है। यह सामाजिक और नीतिगत विषयों पर गहराई से विचार करता है और ऐसी आवाज़ें उठाता है, जिन्हें अक्सर मुख्यधारा में स्थान नहीं मिलता।

वैकल्पिक मीडिया की प्रासंगिकता आधुनिक समाज में बढ़ती जा रही है। यह न केवल उन विषयों को सामने लाता है, जो मुख्यधारा की मीडिया द्वारा उपेक्षित होते हैं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और जनता की आवाज़ को सशक्त करता है। वैकल्पिक मीडिया समाज के लिए एक आवश्यक तंत्र है, जो सूचनाओं के माध्यम से सोचने, समझने और बदलाव लाने का कार्य करता है।

वैकल्पिक मीडिया मुख्यधारा की मीडिया के पूरक के रूप में कार्य करता है, जो न केवल उपेक्षित मुद्दों को उजागर करता है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक बदलाव का भी माध्यम बनता है। इसका महत्व निम्नलिखित पहलुओं में देखा जा सकता है:

1. **मुख्यधारा की मीडिया की कमियों को पूरा करना:** मुख्यधारा की मीडिया व्यवसायिक हितों और TRP (टेलीविजन रेटिंग पॉइंट) के दबाव में अक्सर सामाजिक और नीतिगत मुद्दों को अनदेखा कर देती है। वैकल्पिक मीडिया इन उपेक्षित मुद्दों को उठाकर लोगों को जागरूक करने का कार्य करता है। वैकल्पिक मीडिया का मुख्य उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं है, बल्कि उनके गहरे और दीर्घकालिक प्रभाव पर विचार करना है। यह नीतिगत मामलों और सामाजिक न्याय से संबंधित मुद्दों पर विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वैकल्पिक मीडिया लोगों को सोचने और प्रेरित करने के लिए सामग्री प्रस्तुत करता है। यह समाज में उपेक्षित वर्गों की आवाज़ बनकर उनके अधिकारों और समस्याओं पर चर्चा को बढ़ावा देता है। जैसे: पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण विकास, दलित अधिकार, शिक्षा नीति और अल्पसंख्यक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना।
2. **विविधता और बहुवचनता का समर्थन:** मुख्यधारा की मीडिया में अक्सर एकरूपता या पूर्वाग्रह दिखाई देता है। वैकल्पिक मीडिया विभिन्न विचारों, संस्कृतियों और दृष्टिकोणों को उजागर करके लोकतांत्रिक विविधता को बनाए रखने का कार्य करता है। वैकल्पिक मीडिया का ध्यान सामाजिक उत्तरदायित्व पर होता

है, न कि व्यावसायिक लाभ पर। इसकी सामग्री जनता के हित में तैयार की जाती है, जो उसे अधिक प्रामाणिक और जनोन्मुखी बनाती है।

3. **स्थानीय और जमीनी स्तर की समस्याओं पर ध्यानः** वैकल्पिक मीडिया अक्सर जमीनी स्तर के मुद्दों और स्थानीय समस्याओं को उठाने पर केंद्रित होता है, जिन्हें राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय मीडिया अनदेखा कर देता है। यह सत्ता के दमनकारी प्रभावों और मीडिया की मोनोपॉली के खिलाफ आवाज उठाने में मदद करता है। वैकल्पिक मीडिया लोकतांत्रिक मूल्यों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करता है।
4. **डिजिटल युग में पहुंच और सशक्तिकरणः** इंटरनेट और सोशल मीडिया ने वैकल्पिक मीडिया को एक नई शक्ति दी है, जो पारंपरिक मीडिया के ढांचे को तोड़कर सूचना के लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा देता है। यह न केवल समाज में जागरूकता और सशक्तिकरण लाता है, बल्कि आम जनता को अपनी आवाज़ उठाने का अवसर भी देता है। आज के डिजिटल युग में, वैकल्पिक मीडिया ने स्वयं को मुख्यधारा का पूरक और समाज का सशक्त प्रहरी साबित किया है। अब यह सीमित संसाधनों के बावजूद व्यापक पहुंच रखता है। उदाहरणः ब्लॉग्स, पॉडकास्ट्स, और यूट्यूब चौनल्स द्वारा समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य किया जा रहा है।

मुख्यधारा का विकल्पः वैकल्पिक मीडिया

मुख्यधारा की मीडिया समाज में सूचनाओं के प्रसारण का बड़ा साधन है, लेकिन इसके व्यावसायीकरण, सतही विषयों पर केंद्रित रहने, पक्षपात, और जनता की भागीदारी के अभाव जैसी कमियों ने वैकल्पिक मीडिया (Alternative Media) को एक प्रासंगिक विकल्प के रूप में उभारा है। वैकल्पिक मीडिया व्यावसायिक लाभ से परे सामाजिक और उपेक्षित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है, जैसे दलित, महिला, आदिवासी और अन्य वंचित वर्गों की आवाज़ उठाना। यह स्वतंत्र और निष्पक्ष रिपोर्टिंग के माध्यम से राजनीतिक दबाव और पूर्वाग्रह से मुक्त सामग्री प्रस्तुत करता है, और संवाद को एकतरफा न रखते हुए जनता की भागीदारी को प्राथमिकता देता है। इसके उदाहरणों में ब्लॉग्स और स्वतंत्र वेबसाइट्स (CounterCurrents.org), सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, नागरिक पत्रकारिता, कम्युनिटी रेडियो, पॉडकास्ट और छोटे स्वतंत्र पत्र–पत्रिकाएं जैसे– (खबर लहरिया, Economic and Political Weekly) शामिल हैं, जो स्थानीय और गंभीर सामाजिक–आर्थिक मुद्दों को गहराई से उजागर करते हैं। मुख्यधारा के मीडिया की सीमाओं और एकरूपता को चुनौती देने के लिए वैकल्पिक मीडिया समाज में एक सशक्त विकल्प है। यह न केवल अनसुनी आवाजों को मंच प्रदान करता है, बल्कि लोकतांत्रिक और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना में भी मदद करता है। वास्तव में, वैकल्पिक मीडिया एक वैचारिक क्रांति का पर्याय है।

निष्कर्ष

अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक माध्यम पर आधारित यह अध्ययन समाज में इन दोनों के महत्व और प्रभाव को रेखांकित करता है। यह स्पष्ट करता है कि अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक मीडिया, शिक्षा और संवाद के क्षेत्र में गहनता और व्यापकता लाने के लिए आवश्यक उपकरण हैं। अनौपचारिक शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य ऐसे लोगों को सशक्त बनाना है, जो औपचारिक शिक्षा प्रणाली में शामिल नहीं हो पाते। इसका लचीला और समावेशी स्वरूप इसे खास बनाता है। इसने समाज के पिछड़े, वंचित और कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा के नए द्वार खोले हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, वैश्विक स्तर पर यह महसूस किया गया कि केवल औपचारिक शिक्षा प्रणाली सामाजिक और आर्थिक जरूरतों को पूरा नहीं कर सकती।

1968 में फिलिप कूम्बस ने इस अवधारणा को और मजबूत किया। उन्होंने इसे उन क्रियाशील कार्यक्रमों के रूप में परिभाषित किया, जो समाज की तत्काल जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाए गए थे। अनौपचारिक शिक्षा ने समाज के विभिन्न वर्ग, ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों, श्रमिकों, महिलाओं, और बेरोजगार युवाओं के लिए शिक्षा का एक सशक्त माध्यम प्रदान किया है। इसके उदाहरणों में खुले विश्वविद्यालय, पत्राचार पाठ्यक्रम, सामुदायिक शिक्षा कार्यक्रम और कार्यस्थल पर प्रशिक्षण शामिल हैं। इसके अलावा, यह प्रणाली न केवल शिक्षा प्रदान करती है, बल्कि

एक सच्चे अधिगम समाज की रचना करती है।

अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक मीडिया का समन्वय शिक्षा और सामाजिक जागरूकता में एक नई दिशा देता है। यह न केवल समाज के उपेक्षित वर्गों को सशक्त बनाता है, बल्कि लोकतांत्रिक और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में भी मदद करता है। इन माध्यमों के माध्यम से, न केवल सूचना का लोकतंत्रीकरण हुआ है, बल्कि यह भी सुनिश्चित हुआ है कि समाज का हर व्यक्ति शिक्षा और संवाद के दायरे में शामिल हो। अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक मीडिया न केवल वर्तमान समय की जरूरतें हैं, बल्कि भविष्य के लिए एक मजबूत आधार भी हैं। इनकी व्यापकता और प्रभावशीलता यह साबित करती है कि यह समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अपरिहार्य हैं। इन माध्यमों का सही उपयोग समाज के हर वर्ग को एक बेहतर और समृद्ध जीवन प्रदान करने में मदद कर सकता है। डिजिटल युग में वैकल्पिक मीडिया ने अनौपचारिक शिक्षा के प्रसार को और अधिक प्रभावी बनाया है। यह ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा को पहुंचाने में सहायक सिद्ध हुआ है। आज के समय में सामुदायिक रेडियो, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक मीडिया की प्रासंगिकता को बढ़ा दिया है।

उपर्युक्त विचारों को दृष्टिगत रखते हुए यह प्रासंगिक प्रतीत होता है कि वैकल्पिक मीडिया और भारतीय व्यवस्था परिवर्तन का अध्ययन किया जाये। ऐसे में शिक्षा के प्रसार में वैकल्पिक मीडिया एक बेहतर मंच के तौर पर हमारे सामने मौजूद है, जिसके माध्यम से बेहतर ढंग से अनौपचारिक शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. विद्यार्थी, रामशंकर (शुक्रवार, 7 जुलाई 2017) वैकल्पिक मीडियाः अर्थ एवं अवधारणा, *विद्यार्थी ब्लॉग,* https://reeta-yashvantblog.blogspot.in, से, सोमवार 20 नवंबर 2017 को पुनर्प्राप्त.
2. निरंजन (21 अप्रैल 2010) वैकल्पिक मीडियाः अवधारणा एवं चुनौतियां, *मीडिया ख़बर,* https://mediahindi-blogspot.com/2010/04/blogspost.html से, 3 जनवरी 2024 को पुनर्प्राप्त
3. पाठक, मंगल (2013–14) *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा के आधार एवं विकास,* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2।
4. चतुर्वेदी, जगदीश्वर एवं सिंह (2008) *वैकल्पिक मीडिया लोकतंत्र और नॉम चोमस्की,* अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.(लि.), दरियागंज, नई दिल्ली।
5. भाई, योगेन्द्रजीत (2017–18) *शिक्षा में नवाचार,* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2।
6. वाचस्पति, अविनाश एवं प्रभात, रवीद्र (सं.) (2011) *हिंदी ब्लॉगिंग अभिव्यक्ति नई क्रांति,* हिंदी साहित्य निकेतन बिजनौर।
7. चतुर्वेदी, जगदीश्वर एवं सिंह (2008) *वैकल्पिक मीडिया लोकतंत्र और नॉम चोमस्की,* अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.(लि.), दरियागंज, नई दिल्ली।
8. चावल, प्रदीप (29 अक्टूबर 2018) गैर औपचारिक शिक्षा, gkexam : https://www.gkexams.com/ask/69905-Gair-Aupcharik-Shiksha से, 10 फरवरी 2024 को पुनर्प्राप्त।
9. आनंद (28 नवंबर 2024) शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक अभिकरणों में संबंध, नोट्स वर्ल्डः https://www.notesworld.in/2024/11/blog-post-276.html से, 30 नवंबर 2024 को पुनर्प्राप्त।

––==00==––